अंक 13 माहः सितम्बर 2025

विश्वत

मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN AISECT GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका

"ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्चला विजये
We are Energetic, Influential and are Always Committed"

मास का सूत्र

शिक्षा वही है जो व्यक्ति को समाज के प्रति संवेदनशील, और स्वयं के प्रति उत्तरदायी बनाती है।

संपादकीय

हर अंक के साथ विश्वत का उद्देश्य केवल समाचार देना नहीं, बल्कि विश्वविद्यालय के प्रत्येक अध्ययन शाला की आत्मा को आपके सामने लाना है — उसकी सोच, उसकी दृष्टि, और उसके प्रयासों को सजीव रूप में प्रस्तुत करना है।

हमारे विश्वविद्यालय के १३ स्कूल्स (Schools) ज्ञान के विविध आयामों को अपने-अपने क्षेत्र में साकार कर रहे हैं — कहीं तकनीक और नवाचार की लौ जल रही है, तो कहीं मानवता, संस्कृति, और प्रकृति की सुगंध बिखर रही है। वर्षभर विश्वात के माध्यम से हम इन तेरहों अध्ययन शाला की कहानियाँ आपके साथ साझा करेंगे — एक-एक अंक में, एक-एक स्कूल के प्रेरक कार्यों, उपलब्धियों, और संकल्पों की झलक प्रस्तुत करेंगे।

इस अंक में हम आपको लेकर चल रहे हैं "ऋषि पाराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस" की ओर — एक ऐसा संस्थान जो वेदों की परंपरा से प्रेरित होकर आधुनिक कृषि को आत्मनिर्भरता, स्थायित्व और प्रकृति-सम्मत जीवन के मार्ग पर अग्रसर कर रहा है। यह अध्ययन शाला न केवल कृषि की तकनीक सिखाता है, बल्कि धरती माता के प्रति संवेदना और जिम्मेदारी की भावना भी विकसित करता है।

विश्वात का यह अंक उसी भावना को समर्पित है — जहाँ शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ एक जीवंत संवाद बन जाती है।

— संपादक

डिजिटल न्यूजलेटर टीम
'विश्वत'

University Campus: Village Balkhadsura, Post - Chhaigaon Makhan, Khandwa, Madhya Pradesh - 450771 Phone: 07320-247700/01
www.cvrump.ac.in
Connect with us:

वृतांत ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की जा रही तकनीकों का लाभ केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उन्हें समाज के लिए "सार्वजनिक हित" के रूप में किसानों, उत्पादकों और व्यापारियों तक पहुँचाया जाता है — ताकि खेत से लेकर घर तक खाद्य सुरक्षा, समानता और स्थायित्व सुनिश्चित हो सके।

'ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस' का मूल विचार वैदिक परंपराओं में निहित "प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन" की अवधारणा पर आधारित है। यह स्कूल भारतीय कृषि की प्राचीन वैज्ञानिक दृष्टि को आधुनिक तकनीकों से जोड़ते हुए सतत् और प्राकृतिक कृषि के विकास के लिए कार्यरत है।

डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा — भारत के निमाड़ क्षेत्र का ऐसा प्रथम संस्थान है जिसने कृषि शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में एक नई दृष्टि और दिशा प्रदान की है। इस संस्थान का मुख्य उद्देश्य कृषि क्षेत्र में ऐसे मानव संसाधन तैयार करना है जो वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी हों, साथ ही परंपरागत एवं नवीनतम शोध क्षेत्रों में उत्पादन के अनुकूलन हेतु कार्य कर सकें। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की जा रही तकनीकों का लाभ केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उन्हें समाज के लिए "सार्वजनिक हित" के रूप में किसानों, उत्पादकों और व्यापारियों तक पहुँचाया जाता है — ताकि खेत से लेकर घर तक खाद्य सुरक्षा, समानता और स्थायित्व सुनिश्चित हो सके।

संपादकीय मंडल

संरक्षक : प्रो. (डॉ.)अरुण रमेश जोशी,
कुलगुरु, सी. वी. आर. यू. खंडवा,
प्रधान संपादक : श्री रवि चतुर्वेदी,
कुलसचिव, सी. वी. आर. यू. , खंडवा,
कार्यकारी संपादक : प्रो. नेहा शुक्ला, मुख्य प्रकाशन अधिकारी
सदस्य : 1. डॉ. सीमा शर्मा, डायरेक्टर रिसर्च एंड इनोवेशन
2. डॉ. गणेश मलगाया, डायरेक्टर केंद्रीय प्रयोगशाला समन्वयक
3. प्रो. योगेश महाजन, तकनीकी अधिकारी, कुलगुरु सचिवालय
संकल्पना : श्री प्रमोद पटेल, ग्राफिक डिजाइनर
प्रकाशन विभाग
संचार एवं प्रसार : श्री मनदीप सिंह पंवार, अध्ययनशाला समन्वयक
आर्यभट्ट स्कूल ऑफ डिजिटल लर्निंग
श्री हमज़ा मलिक,
वनमाली केन्द्रीय ग्रंथालय

स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर का उद्देश्य केवल खेती सिखाना नहीं, बल्कि किसान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, संवेदनशीलता और पर्यावरण-सचेतनता से परिपूर्ण नागरिक बनाना है। यहाँ की शिक्षण पद्धति में सतत् संसाधन संरक्षण, तर्कसंगत मूल्य संवर्द्धन, तथा जैविक और न्यून बाह्य इनपुट वाली सटीक कृषि (Low External Input Precision Farming) की समग्र अवधारणा को अपनाया गया है।

स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर में विद्यार्थियों को न केवल खेतों में अनुभवात्मक शिक्षा दी जाती है, बल्कि यह भी सिखाया जाता है कि पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक अनुसंधान के समन्वय से "आत्मनिर्भर कृषि" का निर्माण कैसे किया जा सकता है। इस प्रकार, 'ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस' वास्तव में डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा के उस शैक्षणिक दृष्टिकोण का प्रतीक है, जो "ज्ञान को कर्म से जोड़ते हुए सतत् विकास की दिशा में आगे बढ़ना" सिखाता है।

हमारी दृष्टि (Our Vision)

कृषक समुदाय के लिए उत्कृष्ट मानव संसाधन और अभिनव तकनीकी सेवाओं का विकास करना, जिससे वे न केवल आत्मनिर्भर बनें बल्कि कृषि को एक सम्मानित और समृद्ध पेशे के रूप में स्थापित कर सकें।

हमारा मिशन (Mission)

कृषि के सतत् विकास हेतु शिक्षा, अनुसंधान और विस्तार के माध्यम से ज्ञान और कौशल का संवर्धन करना। अध्ययन शाला का उद्देश्य वैदिक ज्ञान, प्राकृतिक संसाधनों और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के संगम से एक ऐसा शैक्षणिक वातावरण निर्मित करना है जो मानव, प्रकृति और समाज — तीनों के संतुलित विकास का मार्ग प्रशस्त करे।

"कृषि के सतत विकास हेतु शिक्षा, अनुसंधान और विस्तार के माध्यम से ज्ञान और कौशल का संवर्धन करना।"

प्रकृति, प्रगति और परंपरा का संगम:

शैक्षणिक और सामाजिक उपलब्धियाँ ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा

" जहाँ मिट्टी बोलती है, वहीं से विकास की कहानी शुरू होती है "

कृषि केवल अन्न उपजाने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि जीवन, संवेदना और संस्कृति का उत्सव है। इसी भावना को केंद्र में रखकर ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस ने अपने उद्देश्य को ज्ञान, कर्म और करुणा से जोड़ा है। वैदिक जीवन-दर्शन पर आधारित "प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन" की परिकल्पना को आधुनिक कृषि तकनीकों से जोड़ते हुए स्कूल सतत्, वैज्ञानिक और जैविक खेती के क्षेत्र में नई दिशा स्थापित कर रहा है।

यहाँ शिक्षा केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं — बल्कि मिट्टी से संवाद, खेतों से सीख और समाज से संवेदना का अनुभव है। स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर का लक्ष्य ऐसे युवा तैयार करना है जो विज्ञान और संवेदना दोनों के सहारे कृषि को आत्मनिर्भरता, पर्यावरण हितेषी और राष्ट्रीय विकास का आधार बना सकें।

स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर द्वारा आयोजित जैविक खेती के प्रति जागरूकता अभियान, विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण और ग्रामीण विकास कार्यक्रमों ने शिक्षा को प्रयोगशाला से खेतों तक पहुँचाया है। विद्यार्थियों के नेतृत्व और उद्यमिता विकास के लिए आयोजित कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण सत्र उनके आत्मविश्वास और नवाचार की भावना को नई उड़ान दे रहे हैं।

इन सभी प्रयासों से यह सिद्ध होता है कि ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस केवल एक शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि एक जीवंत प्रेरणा केंद्र है — जहाँ मिट्टी में ज्ञान की गंध है, परंपरा में विज्ञान की दृष्टि है, और हर विद्यार्थी में भविष्य का बीज अंकुरित हो रहा है।

स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर के विद्यार्थियों ने ज्ञान को कर्म से जोड़ने की परंपरा को आगे बढ़ाया है। वे राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS), राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) और विभिन्न सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से समाजसेवा में सक्रिय हैं। "हैप्पी हरदा मिशन" के अंतर्गत ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव (RAWE) कार्यक्रम में उन्होंने किसानों के साथ रहकर खेती की वास्तविकताओं को समझा, प्रकृति की लय को महसूस किया, और धरती के साथ एक आत्मीय संबंध बनाया।

"मिट्टी से मिली प्रेरणा, ज्ञान की फसल और विकास का भविष्य"
ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस — जहाँ हर खेत एक प्रयोगशाला है, हर छात्र एक नवाचार का सृजक।

नवाचार, अनुसंधान एवं सामाजिक योगदान

"ज्ञान से कर्म तक — Innovation with Impact"

ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा, निरंतर नवाचार, अनुसंधान और सामाजिक उत्तरदायित्व के माध्यम से ग्रामीण भारत की प्रगति में अपना योगदान दे रहा है। यहाँ हर शोध, हर प्रयोग, और हर पहल का उद्देश्य केवल ज्ञानवृद्धि नहीं, बल्कि समाज और पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव डालना है।

नवीन शोध परियोजनाएँ

ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस में कृषि क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियों — जैसे मृदा स्वास्थ्य, फसल उत्पादकता, और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन — पर केंद्रित कई शोध परियोजनाएँ संचालित की जा रही हैं।

प्रमुख शोध कार्यों में —

- **Reduction of Oxalic Acid in Taro (Arbi)** पर पेटेंट प्रकाशित।
- **Horticulture Pollinating Smart Machine** जैसी नवाचार आधारित तकनीकी पहलें।
- **Rainfall Simulators** का उपयोग कर जल प्रबंधन एवं जलवायु-आधारित अनुसंधान।
- जैविक उर्वरकों और प्राकृतिक कीटनाशकों पर फील्ड-आधारित प्रयोग।

इन परियोजनाओं का उद्देश्य ऐसी व्यावहारिक तकनीकें विकसित करना है जो किसानों की उत्पादकता बढ़ाएँ और पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखें।

सामाजिक पहलें एवं ग्रामीण विकास कार्यक्रम

ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस ने अपने विद्यार्थियों को सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ने हेतु अनेक सार्थक पहलें की हैं —

- **RAWE (Rural Agricultural Work Experience)** कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों ने ग्रामीण समुदायों में रहकर कृषि की वास्तविक परिस्थितियों को समझा।
- **Happy Harda Mission** के तहत विद्यार्थियों ने किसानों को जैविक खेती, फसल चक्र, और जल संरक्षण के आधुनिक उपायों से अवगत कराया।
- समीपवर्ती ग्रामों में तकनीकी प्रदर्शनों **(Technology Demonstrations)** का सफल क्रियान्वयन किया गया, जिससे किसानों को नवीन तकनीकों को अपनाने की प्रेरणा मिली।
- विद्यालय के विद्यार्थियों और शिक्षकों ने मिलकर फार्मर फील्ड स्कूल्स **(Live Laboratory)** के माध्यम से "सीखो और सिखाओ" की अवधारणा को जीवंत रूप दिया।

सतत विकास एवं पर्यावरण संरक्षण

ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस "सतत विकास" को अपनी शिक्षण और अनुसंधान नीति का केंद्र मानता है।

- विद्यार्थियों ने विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण अभियान चलाया।
- जैविक खेती के प्रति जनजागरूकता अभियान आयोजित किए गए।
- परिसर में कचरा प्रबंधन, वाटर हार्वेस्टिंग, और ग्रीन एनर्जी जैसे प्रोजेक्ट लागू किए गए।
- पर्यावरणीय विषयों पर पोस्टर प्रस्तुतियाँ, निबंध प्रतियोगिताएँ, और वाद-विवाद आयोजित किए गए, जिससे विद्यार्थियों में हरित चेतना और जिम्मेदारी की भावना का विकास हुआ।

ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस का प्रत्येक प्रयास — चाहे वह शोध प्रयोगशाला में हो या खेतों में — "Innovation with Impact" की भावना को साकार करता है। यहाँ शिक्षा केवल ज्ञान का संचय नहीं, बल्कि परिवर्तन की प्रक्रिया है — जो मिट्टी, मनुष्य और मानवता — तीनों के बीच संतुलन स्थापित करती है।

नवांकुर : सृजनशीलता और युवा स्वर

हर पीढ़ी अपने साथ नए सपनों, नई सोच और नए दृष्टिकोण की सौगात लेकर आती है। "नवांकुर" उन युवा मनों का मंच है, जो अपनी सृजनात्मकता के माध्यम से समाज, शिक्षा, संस्कृति और पर्यावरण के प्रति जागरूकता का संदेश देते हैं। यहाँ विचारों की कोमल कलियाँ शब्दों का रूप लेती हैं और भावनाएँ कविता, कला, फोटोग्राफी और लेखों के माध्यम से खिल उठती हैं।

इस अंक में छात्र अपनी रचनाओं के माध्यम से यह संदेश दे रहे हैं कि आधुनिकता और परंपरा का संतुलन ही सच्ची प्रगति का मार्ग है। कुछ विद्यार्थियों ने पारंपरिक कृषि पद्धतियों और आधुनिक तकनीकों के समन्वय पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं— वे मानते हैं कि "देशी बीजों की शक्ति और वैज्ञानिक ज्ञान का मेल ही आने वाले कल की टिकाऊ खेती का आधार बनेगा।" किसान परिवार से जुड़े छात्रों ने अपनी कविताओं में मिट्टी की महक और मेहनत की गरिमा को शब्दों में पिरोया है, जबकि अन्य विद्यार्थियों ने सतत विकास, नवाचार और पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों पर अपने विचार साझा किए हैं।

"नवांकुर" केवल लेखन या कला का मंच नहीं, बल्कि भावनाओं और विचारों के अंकुरण की वह भूमि है, जहाँ प्रत्येक छात्र अपनी पहचान, अपनी सोच और अपने सपनों को अभिव्यक्त करने का अवसर पाता है।

"हर विचार एक बीज है — जब यह सृजन की मिट्टी में गिरता है, तो भविष्य की फसल बनता है।"

१.अंजलि वर्मा (B.Sc Agri, Sem–3)
हमारी कृषि परंपरा केवल अन्न उत्पादन नहीं, बल्कि प्रकृति से संवाद का माध्यम रही है। आज जब तकनीक खेतों में उतर आई है — ड्रोन, सेंसर और ऐप्स की मदद से किसान निर्णय ले रहे हैं — तब भी मिट्टी की नमी को छूकर पहचानने का अनुभव, देशी बीजों की खुशबू, और गोमूत्र से बने जैविक घोल का महत्व कभी कम नहीं होगा। आधुनिकता और परंपरा का संगम ही हमारे भविष्य की सच्ची खेती है — जहाँ "देशी ज्ञान" दिशा देता है और "आधुनिक विज्ञान" उसे गति देता है।

2. कविता: मिट्टी का मोल
गरिमा (M.Sc Agri, Sem–3)
मिट्टी बोली — "सुनो ज़रा,
मुझमें ही बसता है सारा धरा।
बीज जो मुझमें सपने बोए,
जीवन के स्वर वही संजोए।"

सूरज की किरणें जब मुझको छूतीं,
आशा की फुहारें मन में झरतीं।
किसान के श्रम की जब आती खुशबू,
धड़क उठे धरती — जीवन का रुख़्सू।

साधन बदलें, युग बदले सारे,
पर मुझसे न टूटे अपने प्यारे।
मैं धरा हूँ — प्रेम की गोद,
मेरे आँचल में पलता मोद।

जो मुझसे जुड़े मन, तन, प्राण,
वही है सच्चा कृषक, महान।
जीवन का मोल वही समझे,
जो मिट्टी का गीत कभी न बिसरे।

भावार्थ:
यह कविता धरती माँ के स्वर में मानव से संवाद करती है — यह बताती है कि खेती केवल अन्न नहीं, बल्कि जीवन, प्रेम और अस्तित्व का प्रतीक है। मिट्टी से जुड़ाव ही सच्ची समृद्धि है।

३."Regenerative Farming – भविष्य की खेती"
लेखक: संदीप चौहान (B.Sc Agri, Sem–5)
हम चार 'J' — जल, जमीन, जानवर और जीवाणु — को आधार मानकर "Regenerative Farming" को नई दिशा दे रहे हैं।
इससे न केवल मिट्टी की उर्वरता बढ़ रही है, बल्कि किसान की आत्मनिर्भरता भी। हमने सीखा है कि खेत सिर्फ अन्न नहीं उगाते — वे "जीवन" उगाते हैं।

जब हम जीवामृत, पंचगव्य और देशी खाद का प्रयोग करते हैं, तब धरती को सांस लेने का अवसर देते हैं।
यही है नवाचार में परंपरा का योगदान।

4. विचार: "कृषि में तकनीकी नवाचार और युवा"
रीतिका मिश्रा (B.Sc Agri, Sem–3)
आज का युवा किसान अब खेत में केवल हल नहीं चलाता, वह डेटा एनालिसिस भी करता है।
ड्रोन, मोबाइल ऐप्स और मिट्टी सेंसर से खेती का चेहरा बदल रहा है।
परंतु इन सबके बीच हमारा असली दायित्व यह है कि तकनीक मानव और प्रकृति के बीच पुल बने, दूरी नहीं।
इसलिए हमें "स्मार्ट फार्मिंग" के साथ "हार्ट फार्मिंग" भी अपनानी होगी — यानी तकनीक में संवेदना जोड़नी होगी।

5. "सतत कृषि – धरती के लिए संकल्प"
कृतिका जोशी (M.Sc Agri,Sem-3)
धरती माँ आज थक चुकी है — हमें उसे आराम देने की ज़रूरत है।
सतत कृषि का अर्थ केवल जैविक खेती नहीं, बल्कि संसाधनों का सम्मान भी है।
हर बूंद जल, हर कण मिट्टी, हर पत्ता जीवन का प्रतीक है।
जब हम रासायनिक खाद की जगह गोबर खाद चुनते हैं, तब हम भविष्य के लिए बीज बोते हैं।
सतत विकास का बीज आज की चेतना से ही अंकुरित होगा।

कृषि शिक्षा में नवाचार, सहभागिता और सफलता की कहानी

ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस केवल एक शिक्षण संस्था नहीं, बल्कि एक जीवंत प्रयोगशाला है — जहाँ शिक्षा, अनुसंधान और समाजसेवा का सुंदर संगम देखने को मिलता है। विद्यालय का विश्वास है कि "ज्ञान तब सार्थक होता है जब वह खेतों, किसानों और समाज के जीवन में परिवर्तन लाता है।"

उद्यमिता एवं नवाचार पहल (Entrepreneurship & Start-up Initiatives)

ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस का उद्देश्य विद्यार्थियों में उद्यमशीलता की भावना और नवाचार की सोच विकसित करना है।

अग्रो–स्टार्टअप इनक्यूबेशन सेल के माध्यम से छात्र जैविक उर्वरक निर्माण, मिट्टी सुधार तकनीक, ड्रोन आधारित फसल निगरानी और कृषि अपशिष्ट से उत्पाद निर्माण जैसी परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं।

इन पहलों का उद्देश्य युवाओं को रोजगार खोजने वाला नहीं, बल्कि रोजगार सृजन करने वाला किसान–उद्यमी बनाना है।

"हर बीज में एक भविष्य छिपा है — और हर विद्यार्थी उस भविष्य को साकार करने वाला नवोन्मेषक है।"

विस्तार एवं सामुदायिक सहभागिता (Extension & Community Outreach)

- ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस के शिक्षक और विद्यार्थी गाँवों में जाकर कृषि जागरूकता अभियान, प्रशिक्षण शिविर, और Farmer Field School जैसी गतिविधियाँ संचालित करते हैं।
- इन पहलों के माध्यम से किसानों को जैविक खेती, जल संरक्षण, फसल विविधीकरण और कम लागत वाली देशी तकनीकों की जानकारी दी जाती है।
- ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस ने सिद्ध किया है कि कृषि शिक्षा का लक्ष्य केवल ज्ञान नहीं, बल्कि समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाना भी है।

" जब खेत मुस्कुराते हैं, तभी शिक्षा का उद्देश्य पूरा होता है। "

छात्र उपलब्धियाँ एवं प्लेसमेंट (Student Achievements & Placements)

- ऋषि पराशर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस के विद्यार्थियों ने विभिन्न राष्ट्रीय कृषि प्रतियोगिताओं, इनोवेशन फेयर्स, और स्टार्टअप समिट्स में उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है।
- कई छात्रों ने अपने एग्री–स्टार्टअप्स शुरू किए हैं, जबकि अन्य अग्रणी एग्री–टेक कंपनियों, फर्टिलाइज़र इंडस्ट्री, और रिसर्च ऑर्गनाइजेशन्स में चयनित हुए हैं।
- इन उपलब्धियों से यह सिद्ध होता है कि विद्यालय न केवल ज्ञान देता है, बल्कि अपने छात्रों को आत्मनिर्भर और समाज–नायक बनने की दिशा में अग्रसर करता है।

वृतांत

➡ डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं वरिष्ठ साहित्यकार संतोष चौबे की नई कहानी संग्रह 'गरीबनवाज' का लोकार्पण 4 सितम्बर को दिल्ली स्थित साहित्य अकादमी में होगा। यह आयोजन वनमाली सृजन पीठ और राजकमल प्रकाशन समूह के संयुक्त तत्वावधान में होगा, जिसमें संतोष चौबे अपने नए संग्रह से कहानियाँ भी पाठ करेंगे। 5 सितम्बर को राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली में सम्भव आर्ट ग्रुप द्वारा उनकी कहानियों पर आधारित नाट्य मंचन भी प्रस्तुत किया जाएगा।

➡ डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा में शिक्षक दिवस पर भव्य समारोह आयोजित कर प्राध्यापकों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में कुलगुरु डॉ. अरुण जोशी, कुलसचिव श्री रवि चतुर्वेदी और श्रीमती गीतिका चतुर्वेदी ने शिक्षकों को स्मृति चिन्ह और शुभकामनाएँ दीं। डॉ. जोशी ने अपने संदेश में कहा कि शिक्षक केवल पढ़ाने वाला नहीं, बल्कि जीवन का दीपक है और उसे स्वयं आदर्श बनकर नई पीढ़ी का मार्गदर्शन करना चाहिए। इस अवसर पर विभिन्न प्राध्यापकों को शोध, नवाचार और विद्यार्थियों को प्रेरित करने हेतु सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. सीमा शर्मा ने किया और एंकरिंग छात्र परिषद अध्यक्ष सत्यम बडगूजर ने की।

➡ दैनिक भास्कर द्वारा निमाड़ के उत्कृष्ट शिक्षकों को सम्मानित करने हेतु टीचर्स एक्सीलेंस अवार्ड 2025 का आयोजन 13 सितम्बर को खंडवा में होगा। इस कार्यक्रम के मुख्य प्रायोजक डॉ. सी. वी. रामन यूनिवर्सिटी, खंडवा रहेंगे। समारोह में क्षेत्र की विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं का विशेष सहयोग रहेगा। इस अवसर पर शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले शिक्षकों को सम्मानित किया जाएगा। यह आयोजन शिक्षकों के समाज निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करेगा।

➡ दैनिक भास्कर और डॉ. सी. वी. रामन यूनिवर्सिटी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित टीचर्स एक्सीलेंस अवार्ड 2025 का भव्य आयोजन 13 सितम्बर को खंडवा के किशोर कुमार सभागृह में होगा। दोपहर 2 बजे से प्रारंभ होने वाले इस कार्यक्रम में शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले शिक्षकों को सम्मानित किया जाएगा। समारोह में अनेक विद्यालयों और महाविद्यालयों का विशेष सहयोग रहेगा। इसी अवसर पर खंडवा बिजनेस डायरेक्टरी 2025 का भी विमोचन किया जाएगा।

➡ डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, खंडवा की बीसीए पंचम सेमेस्टर की छात्रा पायल का चयन जर्मनी में साइबर सोल इंटर्नशिप प्रोग्राम के लिए हुआ है। कुलसचिव रवि चतुर्वेदी ने बताया कि उनकी यात्रा और प्रशिक्षण का पूरा खर्च विश्वविद्यालय वहन करेगा। चयन उनके उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन व गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के आधार पर हुआ। इंटर्नशिप 14 सितम्बर से शुरू होकर दो सप्ताह चलेगी, जिसमें पायल को प्रतिष्ठित इंडस्ट्रीज में सीखने का अवसर मिलेगा। कुलपति डॉ. अरुण जोशी और विश्वविद्यालय परिवार ने इस उपलब्धि पर गर्व व्यक्त किया।